Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 3, July-2023, ISSN 2230-7540

आयुर्वेद के माध्यम से यकृत के कैंसर का प्रबंधन

आचार्य मनीष जी[1*], डॉ. अभिषेक[2], डॉ. गितिका चौधरी[3], डॉ. जयंत बत्रा[4]

[1] फाउंडर-डायरेक्टर, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड, मेरठ
[2] कंसल्टेंट, जीना सीखो लाइफ केयर लिमिटेड, मेरठ
[3] सिनियर कन्सल्टन्ट, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड, मेरठ
[4] क्लिनिकल रिसर्च ऑफिसर, शुद्धि ग्राम हॉस्पिटल, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड, मेरठ

सार - उच्च मृत्यु दर और पारंपरिक चिकित्सा में सीमित उपचार विकल्पों के साथ लिवर कैंसर एक महत्वपूर्ण वैश्विक स्वास्थ्य चिंता है। आयुर्वेद, भारत में उत्पन्न समग्र चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली, यकृत कैंसर के प्रबंधन के लिए एक पूरक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह पेपर, लिवर कैंसर के उपचार में आयुर्वेदिक सिद्धांतों और उनके अनुप्रयोग का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। आयुर्वेद समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा में गहराई से निहित है, जो शारीरिक दोषों (वात, पित्त, कफ), जीवनशैली और व्यक्ति विशेष उपचार के संतुलन पर केंद्रित है। लीवर कैंसर के संदर्भ में, आयुर्वेद शरीर के भीतर संतुलन बहाल करने, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और विषहरण पर जोर देता है। आयुर्वेद लीवर के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए आहार में बदलाव की सलाह देता है। इसमें प्रसंस्कृत और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को कम करते हुए सब्जियों, फलों और जड़ी-बूटियों से भरपूर आहार शामिल है।

खोजशब्द- लीवर कैंसर, आयुर्वेदिक, चिकित्सा, आयुर्वेदिक उपचार

----------X----------

परिचय

मानव शरीर में लीवर एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे दाहिने फेफड़े के ठीक नीचे दाहिनी पसलियों के नीचे रखा जाता है। लीवर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य भोजन को ऊर्जा में परिवर्तित करना और रक्त को छानकर संग्रहित करना लीवर रक्त के विषहरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यानी शरीर की चयापचय गतिविधि के कारण शरीर में उत्पन्न होने वाले विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। लीवर को दो स्रोतों से रक्त प्राप्त होता है, यकृत धमनी से ऑक्सीजन युक्त रक्त की आपूर्ति लीवर को करती है पोर्टल सिरा पाचन अंगों से पोषक तत्वों से भरपूर रक्त ले जाती है। शरीर में चोट लगने पर लिवर रक्त का थक्का जमाने के लिए आवश्यक क्लॉटिंग फ़ैक्टर का भी उत्पादन करता है। यह पोषक तत्वों को अवशोषित करने में मदद करने के लिए, आंतों में पित्त को स्रावित करता है। आयुर्वेद में में लीवर को यकृत कहा जाता है। पित्त यकृत का प्रमुख दोष है। अधिकांश यकृत परिणाम पित्त दोष की विकृत अवस्था के के बढ़ने के कारण होते हैं, जैसे पाचक पित्त का अत्यधिक उत्पादन या इसके प्रवाह में रुकावट। पाचक पित्त में यह गड़बड़ी अवशोषण, पाचन और चयापचय के लिए जिम्मेदार जिम्मेदार अग्नि या एंजाइम गतिविधियों का प्रमुख कारण है।

आयुक्रम में, हमारे पास लीवर विकारों के व्यापक स्पेक्ट्रम के लिए साक्ष्य-आधारित उपचार है। हमारे उपचार में आमतौर पर पंचकर्म प्रक्रियाओं के माध्यम से शरीर का विषहरण शामिल होता है। शरीर की कोशिकाओं और ऊतकों ऊतकों को फिर से जीवीत करने और पित्त को सामना करने के लिए रोगियों को विभिन्न औषधीय उपचार भी दी जाती हैं। हमारा उपचार लीवर के स्वास्थ्य में सुधार लाने और लीवर की क्षति की प्रगति को धीमा करने में अत्यधिक प्रभावी है।

लीवर कई अलग-अलग प्रकार की कोशिकाओं से बना होता होता है। यही कारण है कि लीवर में कई प्रकार के घातक (कैंसरयुक्त) और सौम्य (गैर-कैंसरयुक्त) ट्यूमर बन हैं।

सौम्य ट्यूमर:-

- हेमांजीओमा - यकृत के सौम्य ट्यूमर का सबसे आम प्रकार, रक्त वाहिकाओं में शुरू होता है। चूँकि यकृत के अधिकांश रक्तवाहिकार्बुद कोई लक्षण पैदा नहीं करते हैं, इसलिए उन्हें उपचार की आवश्यकता नहीं होती है। हालाँकि कुछ को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाने की आवश्यकता हो सकती है।

- हेपेटिक एंडीनोमास - ये हेपेटोसाइट्स (यकृत कोशिका का मुख्य प्रकार) के सौम्य ट्यूमर हैं। अधिकांश में कोई लक्षण नहीं होते और उपचार की आवश्यकता नहीं होती। हालाँकि, कुछ अंततः लक्षण पैदा करते हैं, जैसे पेट में दर्द, पेट में द्रव्यमान, या खून की कमी। चूँकि एक जोखिम है कि ट्यूमर फट सकता है, और एक छोटा जोखिम है कि यह अंततः यकृत कैंसर में बदल जाएगा, ज्यादातर विशेषज्ञ आमतौर पर यदि संभव हो तो सर्जरी से हटाने की सलाह देते हैं।

- फोकल नोडुलर हाइपरप्लासिया - यह कई प्रकार की कोशिकाओं का ट्यूमर विकास है। यद्यपि एफएनएच ट्यूमर सौम्य होते हैं, उन्हें वास्तविक यकृत कैंसर से अलग करना मुश्किल हो सकता है, और कभी-कभी निदान अस्पष्ट होने पर उन्हें शल्य चिकित्सा द्वारा हटा दिया जाता है।

घातक ट्यूमर: -

- हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा - यह होने वाले लिवर कैंसर का सबसे आम रूप है। इसे कई अवसरों पर हेपेटोमा कहा जाता है क्योंकि यह हेपेटोसाइट्स से आता है। यह लगभग 75% प्राथमिक यकृत कैंसर के लिए जिम्मेदार है।

- कोलेंजियोकार्सिनोमास - यह प्राथमिक यकृत कैंसर का 10 से 20% हिस्सा है। इन्हें इंट्राहेपेटिक (यकृत से शुरू होने वाला) कोलेंजियोकार्सिनोमा भी कहा जाता है। ये कैंसर यकृत के भीतर छोटी पित्त नलिकाओं में शुरू होता है।

- एंजियोसार्कोमा और हेमांजी ओसारकोमा - ये दुर्लभ कैंसर हैं जो यकृत की रक्त वाहिकाओं में शुरू होते हैं। विनाइल क्लोराइड या सोडियम ऑक्साइड जैसे विभिन्न रसायनों और रेडियम जैसे रेडियोधर्मी तत्वों तत्वों या आर्सेनिक जैसे जहर के संपर्क में आने से इस प्रकार के कैंसर होते हैं। एंजियोसार्कोमा तेजी से बढ़ते हैं, जब तक उनका पता चलता है तब तक वृद्धि इतनी बड़ी हो जाती है कि उन्हें शल्यचिकित्सा शल्यचिकित्सा से हटाया नहीं जा सकता।

- हेपेटोब्लास्टोमा - यह एक बहुत ही दुर्लभ प्रकार का कैंसर है जो आमतौर पर पांच साल तक के बच्चों में विकसित होता है। अगर जल्दी पता चल जाए तो इस कैंसर का इलाज संभव है।

लक्षण:

लिवर कैंसर में लक्षण और लक्षण अंतिम चरण तक मौजूद नहीं होते हैं जब कैंसर फैल चुका होता है। कई संकेत और लक्षण अपेक्षाकृत गैर-विशिष्ट होते हैं, वे अन्य कैंसर या गैर-कैंसरयुक्त बीमारियों के कारण हो सकते हैं। हालाँकि निम्नलिखित लक्षणों पर ध्यान देने देने की आवश्यकता हो सकती है।

- अस्पष्टीकृत, अनजाने में वजन कम होना।

- एनोरेक्सिया - भूख की लगातार कमी।

- लीवर का बढ़ना या एक द्रव्यमान जिसे लीवर के क्षेत्र में महसूस किया जा सकता है।

- लगातार पेट दर्द रहना।

- पीलिया।

- हाइपरग्लेसेमिया - कुछ लीवर हार्मोन हाइपरग्लेसेमिया (उच्च रक्त कैल्शियम स्तर) का कारण बन सकते हैं। इससे कमजोरी आ सकती है.

- हाइपोग्लाइसीमिया - निम्न रक्त शर्करा का स्तर, जिससे बेहोशी हो सकती है।

- गाइनेकोमेस्टिया - पुरुषों में स्तनों का बढ़ना और वृषण का सिकुड़ना।

- एसिटिस - पेट क्षेत्र में जल प्रतिधारण। कई मरीजों में ये लक्षण देखे जाते हैं.

www.ignited.in

जोखिम कारक

- लिंग - हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा मुख्य रूप से महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक आम है।
- क्रोनिक वायरल हेपेटाइटिस - हेपेटाइटिस बी वायरस या हेपेटाइटिस सी वायरस से क्रोनिक (दीर्घकालिक) संक्रमण लिवर कैंसर का एक महत्वपूर्ण जोखिम कारक है। ये संक्रमण लीवर कैंसर को दुनिया में सबसे आम प्रकार का कैंसर बनाने के लिए जिम्मेदार हैं।
- सिरोसिस - सिरोसिस यकृत में निशान ऊतक के गठन का परिणाम है। इससे अक्सर कैंसर हो सकता है। अधिकांश लिवर सिरोसिस उन लोगों में होता है जो शराब का दुरुपयोग करते हैं। लेकिन, हेपेटाइटिस बी और सी भी लिवर सिरोसिस के प्रमुख कारण हैं। दूसरा कारण लीवर में आयरन की अधिकता है।
- तम्बाकू का उपयोग - तम्बाकू के उपयोग और यकृत कैंसर के बीच एक संबंध स्थापित किया गया है। शराब के साथ तम्बाकू मिलकर कैंसर पैदा करने में बहुत शक्तिशाली है।
- वंशानुगत चयापचय रोग - कुछ चयापचय रोग भी सिरोसिस का कारण बन सकते हैं। हेमोक्रोमैटोसिस वाले लोग अपने भोजन से बहुत अधिक आयरन अवशोषित करते हैं। उनके लीवर में आयरन का उच्च स्तर होने के कारण उनमें सिरोसिस विकसित होने की संभावना अधिक होती है।
- एफ्लाटॉक्सिन - ये कैंसर पैदा करने वाले पदार्थ एक कवक द्वारा उत्पन्न होते हैं जो फसलों को दूषित करते हैं। लंबे समय तक संपर्क में रहने से हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा हो सकता है।
- आर्सेनिक - कुओं जैसे प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले आर्सेनिक से दूषित पेयजल के लगातार संपर्क में रहने से लीवर कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

निदान: -

आधुनिक विज्ञान द्वारा लीवर कैंसर के निदान में निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया जाता है।

- अल्ट्रासाउंड
- कंप्यूटेड टोमोग्राफी (सीटी)
- चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एमआरआई)
- एंजियोग्राफी
- लेप्रोस्कोपी
- बायोप्सी
- अल्फा-भ्रूणप्रोटीन रक्त परीक्षण।

मंचन:-

- **स्टेज 1** - ट्यूमर छोटा या बड़ा हो सकता है लेकिन रक्त वाहिकाओं को प्रभावित नहीं करता है।

  है।
- **स्टेज 2** - बड़े आकार के कई ट्यूमर हो सकते हैं लेकिन रक्त वाहिकाएं अभी तक प्रभावित नहीं हुई हैं।
- **स्टेज 3-ए** - कई ट्यूमर होते हैं, और कम से कम एक 5 सेमी से बड़ा होता है। और एक ट्यूमर प्रमुख यकृत रक्त वाहिकाओं की एक पर आक्रमण करता है। (पोर्टल शिरा या यकृत शिरा)
- **स्टेज 3-बी** - एक ट्यूमर पास के अंग पर आक्रमण करता है या एक ट्यूमर यकृत की परत में प्रवेश कर गया है।
- **स्टेज 3-सी -** कैंसर ने आस-पास के लिम्फ नोड्स नोड्स पर आक्रमण कर दिया है।
- **स्टेज 4** - कैंसर शरीर के अन्य भागों में फैल गया है।

लीवर ट्यूमर

लिवर ट्यूमर लिवर पर या उसके अंदर ऊतकों या कोशिकाओं की असामान्य वृद्धि है। सौम्य (हानिरहित) लिवर ट्यूमर वे होते हैं जो प्रकृति में गैर-कैंसरयुक्त होते हैं और शरीर के अन्य अंगों में नहीं फैलते हैं। सौम्य यकृत ट्यूमर के तीन सबसे आम प्रकार हेमांजी ओमास, हेपैटोसेलुलर ऐडीनोमास और फोकल नोड्यूलर हाइपरप्लासियास हैं। हेमांजी ओमास सभी सौम्य यकृत ट्यूमर में सबसे आम है और वे असामान्य रक्त वाहिकाओं के समूह हैं। फोकल नोडुलर हाइपरप्लासिया कम आम हैं और आम तौर पर 20 और 30 वर्ष की महिलाओं में पाए जाते हैं।

हेपेटोसेल्यूलर एडिनोमा सबसे कम आम है और यह उन महिलाओं को प्रभावित करता है जो बच्चे पैदा करने की उम्र में हैं। सौम्य लिवर ट्यूमर के कुछ लक्षणों में वजन कम होना, थकान, भूख न लगना और पेट में सूजन शामिल हैं। ये ट्यूमर कैंसरग्रस्त नहीं होते हैं और अधिकांश मामलों में दर्द का कारण नहीं बन सकते हैं। इसलिए, इसका पता लगाया आम तौर पर आसान नहीं होता है और इसका निदान केवल अल्ट्रासाउंड, सीटी टेस्ट या एमआरआई या स्कैन के जरिए ही किया जा सकता है। जब ट्यूमर कैंसर का रूप ले लेता है तो सर्जरी ही एकमात्र विकल्प होता है लेकिन उससे पहले दवाइयों से इसकी रोकथाम की जा सकती है। आयुर्वेद उपचार सौम्य होते हैं और स्थायी राहत का आश्वासन देते हैं।

लिवर कैंसर का विकास

लीवर एक बहुत ही व्यस्त अंग है जो शरीर के ऊपरी दाएं चतुर्थांश में शरीर के अंदर चुपचाप पड़ा रहता है। यह चुपचाप महत्वपूर्ण चयापचय कार्य करता है। इसे शरीर का मुख्य ऊर्जा देने वाला स्रोत या मानव शरीर में अपूरणीय शक्ति संयंत्र भी कहा जा सकता है।

लिवर कैंसर में लिवर कोशिकाएं अपेक्षा से अधिक तेजी से बढ़ने लगती हैं। जब संख्या असामान्य मात्रा में बढ़ जाती है और पड़ोसी कोशिकाओं पर भी कब्ज़ा करने लगती है, तो कैंसर फैलता है। इससे अन्य स्थानों पर नए ट्यूमर का निर्माण होता है, जिसका अर्थ है कि कैंसर मेटास्टेसिस हो गया है। अधिकांश समय, यकृत कैंसर की उत्पत्ति का क्षेत्र नहीं है; इसके बजाय, यह मेटास्टेसिस का परिणाम है। यह रोग कहीं और से शुरू होता है लेकिन यकृत क्षेत्र तक फैल जाता है।

कोशिकाएं जीवित हैं, और उनका एक विशेष जीवन काल होता है, लेकिन यदि वे मरने से इनकार कर दें तो क्या होगा? यदि नई कोशिकाएँ जन्म लेती हैं तो पुरानी कोशिकाएँ जीवित रहती हैं तो क्या होता है? नई और पुरानी कोशिकाएं एक सीमित क्षेत्र में एकत्रित होती रहेंगी, जिससे शरीर की प्राकृतिक कार्यप्रणाली बाधित होगी। क्या इस गुणन प्रक्रिया को विनियमित करने का कोई तरीका है?

यह आपको आश्चर्यचकित कर सकता है, लेकिन महिलाओं की तुलना में पुरुषों में लिवर कैंसर होने की संभावना अधिक होती है। 40 साल की उम्र के बाद भी इस खतरनाक बीमारी के होने की संभावना बढ़ जाती है। नस्ल, आहार और जीवनशैली भी लीवर कैंसर को प्रभावित करते हैं।

लीवर रोग का आयुर्वेदिक उपचार

लिवर कैंसर आयुर्वेदिक उपचार आयुर्वेद की एक पुरानी पारंपरिक पद्धति है। लिवर कैंसर लिवर के बाहर या अंदर विकसित हो सकता है। इसमें रक्त वाहिकाएं और पित्त नली भी शामिल हैं। लीवर शरीर का एक आवश्यक अंग है और स्वस्थ अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है। फेफड़ों के कैंसर का निदान आधुनिक उपकरणों के माध्यम से या पेट में द्रव्यमान बनना, पेट में दर्द और बेचैनी, यकृत की शिथिलता, पीलिया, मतली और उल्टी जैसे लक्षणों के साथ किया जाता है।

पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली में, लीवर कैंसर का इलाज कीमोथेरेपी, विकिरण चिकित्सा और लीवर प्रत्यारोपण है। है। लेकिन सभी उपचार आपके स्वास्थ्य के लिए कई बार बार अंशतः फलदायी सिद्ध होते है। शरीर पर इसके हानिकारक प्रभाव भी दिखाई देता है जिससं कभी कभी और जीवित रहने का दर कम होता है। इसीलिए यह आयुर्वेदिक उपचार इस घातक स्वास्थ्य समस्या को रोकथाम करने और कीमोथेरपी विकिरण चिकित्सा के दुष्परिणाम काम करने का एक सुरक्षित तरीका है। आयुर्वेदिक उपचार का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता है, और यह क्षतिग्रस्त हेपेटोसाइट्स को फिर से जीवंत करने करने में मदद करता है। आयुर्वेद लीवर की कार्यप्रणाली में सुधार लाता है और लंबे समय तक जीवित रहने की उम्मीद जगाता है।

आयुर्वेद में लिवर कैंसर का इलाज प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और आयुर्वेदिक उपचारों का उपयोग करके किया जाता है। आयुर्वेद लीवर की स्व-उपचार क्षमता को बढ़ाता है। यह आपको तीन दोषों के बीच संतुलन

www.ignited.in

बनाए रखने में मदद करता है और आपके शरीर को पुरानी बीमारियों से बचाता है। आपको जीवन-घातक स्थितियों से बचाने के लिए लिवर आयुर्वेदिक उपचार में विभिन्न प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। इसमें स्वस्थ जीवन शैली, पौष्टिक आहार, योग, ध्यान और आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का उपयोग शामिल है।

स्वस्थ जीवनशैली और आहार:

लिवर कैंसर के इलाज में इसके सकारात्मक परिणाम पाने के लिए स्वस्थ जीवनशैली जरूरी है। कुछ हेल्थ टिप्स आपको कैंसर होने से बचाएंगे।

- शराब के सेवन से बचें।
- जंक फूड या अस्वास्थ्यकर मसालेदार खाद्य पदार्थों का सेवन बंद करें।
- स्वस्थ वजन बनाए रखने के लिए कुछ व्यायाम करें।
- अपने शरीर, दिमाग और आत्मा को आराम देने के लिए उचित आराम और नींद लें।
- पशु-आधारित खाद्य पदार्थ जैसे मांस, अंडे, दूध, दूध से बने उत्पाद खाना बंद करें।

स्वस्थ आहार:

लिवर कैंसर के इलाज के लिए स्वस्थ आहार महत्वपूर्ण है। जब भी आप डाइट करने जा रहे हों तो आपको एक बात अपने दिमाग में जरूर रखनी चाहिए, वो है.

- प्रतिदिन अखरोट का सेवन करें क्योंकि यह आपके लीवर की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने में मदद करता है।
- अपने आहार में हरी सब्जियां या सलाद लें।
- विषाक्त पदार्थों को बनने से रोकने के लिए ताजे फल या रेशेदार आहार खाएं।
- अपने भोजन योजना में मांसाहारी भोजन से बचें।

आयुर्वेदिक उपचार या प्राकृतिक औषधि वनस्पतियों का उपयोग:

आयुर्वेद में, विभिन्न आयुर्वेदिक उपचार लीवर के कार्यभार को कम करते हैं।

- **पंचकर्म थेरेपी:** यह आयुर्वेदिक उपचारों में से एक है जिसमें आपको स्वस्थ और बीमारियों से मुक्त रखने के लिए आयुर्वेदिक वनस्पति के साथ शरीर की कोशिकाओं से पूरे शरीर के विषाक्त पदार्थों को निकाला जाता है और शुद्ध किया जाता है। पंचकर्म थेरेपी लिवर कैंसर आयुर्वेदिक उपचार का पहला और महत्वपूर्ण चरण है।
- हल्दी: हल्दी एंटीऑक्सीडेंट युक्त एक आवश्यक प्राकृतिक औषधि वनस्पति है। एंटीऑक्सीडेंट लीवर की विषहरण प्रक्रिया को बढ़ावा देता है और और लीवर पर अधिक भार कम करता है। इसमें कैंसर रोधी गुण होते हैं जो हेपेटोसाइट्स की असामान्य वृद्धि या गुणन को रोकते हैं।
- **अश्वगंधा**: यह एक उपयोगी आयुर्वेदिक वनस्पति है जिसमें सूजन-रोधी गुण होते हैं। यह हेपेटाइटिस बी वायरस या हेपेटाइटिस सी वायरस के खिलाफ आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है। है। यह एक एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर वनस्पति है जो शरीर से जहरीले पदार्थों को साफ करती है।
- **गिलोय**: **मजबूत कैंसर-विरोधी गुणों से युक्त, गिलोय शरीर में एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि का कारण बनता है जो कोशिकाओं की असामान्य वृद्धि से होने वाले नुकसान को उलट देता है। इसमें ऐसे रासायनिक यौगिक होते हैं जो कैंसर को भी रोकते हैं।**

लिवर कैंसर में, आयुर्वेदिक उपचार में तुलसी, हरड़, त्रिफला, गुग्गुल, गिलोय और आंवला जैसी अन्य वनस्पति शामिल हैं। इसलिये यह आयुर्वेदिक पंचकर्म जैसा शुद्धी कर्म और औषधी वनस्पतीया इस समस्या को रोकथाम के लिए इन सभी औषधि वनस्पति के साथ एक अनोखा आयुर्वेदिक कैंसर विरोधी उपचार पेश किया है।

निष्कर्ष

आयुर्वेद में लिवर कैंसर का इलाज प्राकृतिक *औषधि वनस्पतियों* और आयुर्वेदिक उपचारों का उपयोग करके किया जाता है। आयुर्वेद लीवर की स्व-उपचार क्षमता को बढ़ाता है। यह आपको तीन दोषों के बीच संतुलन बनाए

रखने में मदद करता है और आपके शरीर को पुरानी बीमारियों से बचाता है। आपको जीवन-घातक स्थितियों से बचाने के लिए लिवर आयुर्वेदिक उपचार में विभिन्न प्रक्रियाओं प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। इसमें स्वस्थ जीवन शैली, पौष्टिक आहार, योग, ध्यान और आयुर्वेदिक *औषधि वनस्पति* का उपयोग शामिल है। लिवर कैंसर में, आयुर्वेदिक उपचार में तुलसी, हरड़, त्रिफला, गुग्गुल, गिलोय और आंवला आंवला जैसी अन्य *औषधि वनस्पति* शामिल हैं। *इसलिये यह आयुर्वेदिक पंचकर्म जैसा शुद्धी कर्म और औषधी वनस्पतीया इस समस्या को रोकथाम के लिए इन सभी औषधि वनस्पति के साथ एक अनोखा आयुर्वेदिक कैंसर विरोधी उपचार पेश किया है।*

संदर्भ

1. बालाचंद्रन, पी., और गोविंदराजन, आर. (2005)। कैंसर- एक आयुर्वेदिक परिप्रेक्ष्य। औषधीय अनुसंधान, 51(1), 19-30.
2. कुमारस्वामी, बी.वी. (1994)। कैंसर की आयुर्वेदिक पहचान एवं वैचारिक विश्लेषण। जीवन का प्राचीन विज्ञान, 13(3-4), 218.
3. वाघे, एस. (2023)। आयुर्वेद में घातक बीमारियों का गंभीर विश्लेषण। जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड होलिस्टिक मेडिसिन (जेएएचएम), 11(6)।
4. ट्रैविक, एम. (1991)। कैंसर का एक आयुर्वेदिक सिद्धांत. चिकित्सा मानवविज्ञान, 13(1-2), 121-136.
5. वेंकटचलपति, डी., शिवमल्लू, सी., प्रसाद, एस.के., थंगराज सारधा, जी., रुद्रपति, पी., अमाचवाड़ी, आर.जी., ... और बसलिंगप्पा, के.एम. (2021)। हेपजी2 सेल लाइन का उपयोग करके यकृत कै के खिलाफ पौधे के अर्क की कीमोप्रिवेंटिव क्षमता का आकलन। अणु, 26(15), 4593.
6. रस्तोगी, एस., और रस्तोगी, आर. (2012)। मेटास्टैटिक लिवर रोग में आयुर्वेदिक हस्तक्षेप। द जर्नल ऑफ़ अल्टरनेटिव एंड कॉम्प्लिमेंट्री मेडिसिन, 18(7), 719-722।
7. दिग्गवी, एम., और राव, एम. (2021)। कामला (हेपेटाइटिस बी) के प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका-एकल केस अध्ययन।
8. माली, डी. आर., अमृतकर, एस. वी., पाटिल, एम. ए., कुलकर्णी, एम. यू., योगेश निकम, एम., और काले, एम. ए. लीवर के स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेदिक दवाएं।
9. पांडा, ए.के., और रथ, के.के. (2019)। क्रोनिक लिवर रोगों के लिए आयुर्वेदिक उपचार परिणाम। जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटेड मेडिकल साइंसेज, 4(06), 190-193।
10. वाघे, एस. (2022). आयुर्वेद में घातक बीमारियों का गंभीर विश्लेषण। जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड होलिस्टिक मेडिसिन (जेएएचएम), 11(6)।
11. दिग्गवी, एम., और राव, एम. (2021)। कामला (हेपेटाइटिस बी) के प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका-एकल केस अध्ययन।
12. अफ़ज़ल, एन., रानी, एम., शर्मा, एस.के., और शुक्ला, जी.डी. (2019)। कैंसर प्रबंधन में सहायक चिकित्सा के रूप में आयुर्वेद। पर्यावरण संरक्षण जर्नल, 20(एसई), 15-20।
13. https://my.clevelandclinic.org/health/diseases/21881-tumor
14. https://www.lybrate.com/topic/begin-liver-tumors-ayurvedic-remedies-that-can-help-controlling-it/b7fecea093158a8d2ac8ae96999fdc4e
15. https://shuddhi.com/ayurvedic-solution-for-liver-cancer-stage-4/

Corresponding Author

आचार्य मनीष जी*

फाउंडर-डायरेक्टर, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड, मेरठ